IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्रीमद्भगवद् गीता की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में व्यक्तित्व निर्माण में भूमिका

निर्देशक
डॉ. विकास सैनी
(असिस्टेंट प्रोफेसर)
आईएएसई.मानित विश्वविद्यालय, सरदारशहर

प्रस्तुतकर्ता
तुलसीराम कुमावत
पीएच. डी स्कॉलर

सरांशः–

भगवद्गीता भारतीय संस्कृति का दार्शनिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक ग्रन्थ है। इसमें व्यक्तित्व निर्माण के आवश्यक जीवन मूल्यों का प्रतिपादन किया गया है। गीता के अनुसार कर्तव्य पालन, आत्मसंयम, ज्ञान, भक्ति और योग मानव को आदर्श व्यक्तित्व की ओर अग्रसर करते हैं। यह शोध पत्र गीता में वर्णित व्यक्तित्व निर्माण के तत्वों का विश्लेषण करता है तथा आधुनिक जीवन में उनके प्रयोग की संभावना को स्पष्ट करता है।

जीवन के वास्तविक अनुभवों एवं व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए ''श्रीमद्भागवत गीता'' में वर्णित ''श्री कृष्ण'' के दिये गए उपदेशों को समाहित किया गया है। वर्तमान समय मं सभी ने कोरोना महामारी जैसी समस्या का सामना किया जिसमें शिक्षा के क्षेत्र में भी अनेक समस्यायें जैसे पढ़ाई में मन नहीं लगना, लक्ष्य का निर्धारण नहीं हो पाना आदि समस्याओं के समाधान हेतू शोधार्थी ने वर्तमान परिस्थितियों में श्रीमद्भगवद् गीता में अंतर्निहित व्यक्तित्व निर्माण के तत्वों का विश्लेषण करता है तथा आधुनिक जीवन में उनके प्रयोग की संभावना को स्पष्ट करता है। जिसे पढ़कर विद्यार्थियों को शैक्षिक समस्याओं का समाधान मिला। जैसे – एकाग्रता, लक्ष्य के निर्धारण की आवश्यकता, भविष्य संचेता आदि।

मुख्य शब्द :– भगवद्गीता, व्यक्तित्व निर्माण, कर्मयोग, भक्ति, आत्मज्ञान।

भूमिका :–

भारतीय आध्यात्मचिन्तन के प्राणभूत, वैदिक संस्कृति के सारस्वरूप गीता की महत्ता है। गीता के सात सौ श्लोकों में वेदों का सार वर्णित है। इसकी भाषा जितनी सरल है, भाव उतने ही अधिक गम्भीर हैं, गीता के सन्दर्भ में प्रचलित गाथा के अनुसार व्यास जी ने अठारह पुराण, नौ व्याकरण और चारों वेदों का मन्थन कर महाभारत की रचना की। उस महाभारतरूपी सागर का मन्थन करने से गीता प्रकट हुई और उस गीता का सार निकालकर कृष्ण ने धनुर्धर अर्जुन के मुख में डाल दिया यथा –

अष्टादश पुराणानि नव व्याकरणानि च।
निर्मथ्य चतुरो वेदान् मुनीना भारते कृतम।।
भारतो दधि निर्मथ्य गीता निर्मथितस्य च।
सरमुद्धत्य कृष्णेन अर्जुनस्य मुश्वे धृतम।।[73]

गीता में कर्म व्यवहार द्वारा व्यक्तित्व निर्माण गीता के समन्वयात्मक सन्देष का क्षेत्र सार्वभौम है। यह हमारे व्यावहारिक जीवन का दार्षनिक आधार है।

व्यक्तित्व निर्माण केवल शारीरिक या मानसिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक उन्नति भी शामिल है। भगवद्गीता न केवल एक धार्मिक ग्रन्थ है बल्कि यह जीवन का व्यावहारिक दर्षन प्रस्तुत करती है। गीता के संदेष आज भी व्यक्ति को संकट, मोह और असमंजस से निकालकर सत्य, कर्तव्य और आत्मोन्नति की ओर प्रेरति करते हैं।

शोध उद्देश्य :–

(अ) गीता में व्यक्तित्व निर्माण के प्रमुख तत्वों की पहचान करना ।

(ब) व्यक्तित्व निर्माण में कर्मयोग, भक्तियोग और ज्ञानयोग की भूमिका को स्पष्ट करना।

(स) आधुनिक जीवन में गीता के संदेषों की प्रासंगिकता पर प्रकाष डालना।

(अ) गीता में व्यक्तित्व निर्माण के प्रमुख तत्व :–

गीता में व्यक्तित्व निर्माण के प्रमुख तत्वों की व्याख्या बहुत गहराई से की गई है। श्रीमद्भगवद्गीता केवल एक धार्मिक ग्रन्थ ही नहीं है बल्कि यह जीवन दर्षन, आत्मविकास और आदर्ष व्यक्तित्व के निर्माण की संहिता भी है। इसमें व्यक्ति के आंतरिक तथा बाह्य दोनों ही स्तरों पर संतुलित विकास के लिए मार्गदर्षन मिलता है। विस्तृत रूप से इसके प्रमुख तत्व इस प्रकार है–

1. आत्मज्ञान (Self - knowledge)

- गीता में बार बार आत्मा की अमरता, शाष्वतता और नष्वर शरीर से उसके भिन्न स्वरूप का विवेचन मिलता है। ''न जायते म्रियते वा कदाचित्....''(अध्याय 2, श्लोक 20)
- ऐसा आत्मज्ञान ही व्यक्तित्व का आधार है क्योंकि जो स्वयं को पहचान लेता है, वही सषक्त व्यक्तित्व विकसित करता है।
- उदाहरणः अर्जुन का विषाद इसी कारण दूर हुआ क्योंकि कृष्ण ने आत्मा के स्वरूप का ज्ञान कराया ।
- व्यक्तित्व निर्माण में योगदानः आत्मज्ञान व्यक्ति को भय, षोक और मोह से मुक्त करता है तथा आत्मविष्वास और स्थिरता प्रदान करता है।

2. कर्मयोग (Discipline of Action)

- गीता–सन्दर्भ : '' कर्मण्यवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन''.....(अध्याय 2, श्लोक 47)।
- व्याख्याः निष्काम कर्म का सिद्धान्त बताता है कि व्यक्ति को केवल कर्तव्य पालन का अधिकार है, फल की चिंता करना उसका कार्य नहीं।
- उदाहरणः अर्जुन को युद्ध केवल कर्तव्य भावना से करने की प्रेरणा दी गई।
- व्यक्तित्व निर्माण में योगदानः यह सिद्धान्त व्यक्तित्व में परिश्रमषीलता, कर्तव्यनिष्ठा, निष्ठा और कार्यकुषलता विकसित करता है।

3. सात्त्विक गुणों का विकास (Cultivation of Sattva)

- गीता–सन्दर्भ : '' सत्त्वं सुखे संजयति....''(अध्याय 14)।
  - व्याख्याः गुणत्रय (सत्त्व, रजस्, तमस्) में सत्त्व सर्वोच्च माना गया है। यह ज्ञान, सत्य, विवके, और शांति का प्रतिनिधि है।
  - उदाहरणः सत्त्वगुणी व्यक्ति समाज में आदर्ष और प्रेरणास्रोत बनता है।
  - व्यक्तित्व निर्माण में योगदानः सत्त्वगुण व्यक्ति को नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से उच्च बनाते है, जिससे उसका चरित्र सुदृढ़ होता है।

4. संयम और इन्द्रियनिग्रह (Self-control & Discipline)

- गीता–सन्दर्भ : '' उद्धरेदात्मनात्मानं....''(अध्याय 6, श्लोक 5)।
- व्याख्याः मन और इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने वाला व्यक्ति आत्मान्नति कर सकता है।
- उदाहरणः योगी अपने संयम और साधना द्वारा मन को स्थिर करता है।
- व्यक्तित्व निर्माण में योगदानः संयमित व्यक्ति अपने लक्ष्य पर केंन्द्रित रहता है और कठिन परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होता।

5. समत्व (Equanimity)

- गीता–सन्दर्भ : '' योगस्थः कुरू कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनन्जय। सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।''(अध्याय 2, श्लोक 48)।
- व्याख्याः सुख–दुःख, हानि–लाभ, जय–पराजय में समान भाव रखना ही समत्व है।
- उदाहरणः युद्ध भूमि में अर्जुन को यह षिक्षा दी गई कि परिणाम की चिन्ता न कर केवल कर्तव्य करो।
- व्यक्तित्व निर्माण में योगदानः यह गुण मानसिक संतुलन और धैर्य प्रदान करता है, जिससे व्यक्ति आदर्ष नेतृत्व के योग्य बनता है।

6. भक्ति और श्रद्धा (Devotion & Faith)

- गीता–सन्दर्भ : ''मन्मना भव मद्भक्तो...''(अध्याय 9, श्लोक 34)।
- व्याख्याः ईष्वर में भक्ति और श्रद्धा व्यक्ति के भीतर विनम्रता, सेवा, सहिष्णुता और करूणा का भाव उत्पन्न करती है।
- उदाहरणः अर्जुन ने अन्ततः भगवान कृष्ण के प्रति पूर्ण समर्पण कर युद्ध स्वीकार किया।
- व्यक्तित्व निर्माण में योगदानः भक्ति से व्यक्ति का व्यक्तित्व सौम्य, विनम्र और प्रेरणादायी बनता है।

7. धैर्य और आत्मबल (Fortitude & Inner Strength)

- गीता–सन्दर्भ : ''मात्रास्पर्षास्तु कौन्तेय...''(अध्याय 2, श्लोक 14)।
- व्याख्याः इन्द्रियों और बाहरी परिस्थितियों से उत्पन्न सुख–दुःख क्षणभंगुर है, अतः इन्हे धैर्यपूर्वक सहना चाहिए।
- उदाहरणः तपस्वी, साधु सन्त प्रतिकूलताओं में भी आत्मबल से टिके रहते है ।
- व्यक्तित्व निर्माण में योगदानः यह गुण व्यक्ति को साहसी और स्थिर बनाता है, जिससे समाज में प्रेरणा मिलती है।

8. नैतिकता और कर्तव्यनिष्ठा (Morality & Duty-consciousness)

- गीता–सन्दर्भ : ''श्रेयान स्वधर्मो विगुणः...''(अध्याय 3, श्लोक 35)।
- व्याख्याः स्वधर्म का पालन ही श्रेष्ठ है, चाहे वह अपूर्ण क्यों न हो।
- उदाहरणः अर्जुन का क्षत्रिय धर्म ही युद्ध करना था।
- व्यक्तित्व निर्माण में योगदानः यह व्यक्ति को जिम्मेदार, ईमानदार और समाजोपयोगी बनाता है।

9. नेतृत्व और लोकसंग्रह (Leadership & Welfare of Society)

- गीता–सन्दर्भ : ''यद्यदाचरित श्रेष्ठस्तत्त्देवेतरो जनः...''(अध्याय 3, श्लोक 21)।
- व्याख्याः श्रेष्ठ पुरूष जो आचरण करता है, सामान्य लोग उसका अनुसरण करते है।

- उदाहरणः भगवान कृष्ण स्वयं आदर्ष नेतृत्व के प्रतीक रहे।
- व्यक्तित्व निर्माण में योगदानः यह व्यक्ति को समाज के लिए आदर्ष और प्रेरणास्त्रोत बनाता है।

(ब) व्यक्तित्व निर्माण में कर्मयोग, भक्तियोग और ज्ञानयोग की भूमिका :–

1. **कर्मयोग और व्यक्तित्व निर्माण** :– गीता के अनसार कर्म ही जीवन का आधार है। निष्काम कर्मयोग व्यक्ति .को निःस्वार्थ सेवा और कर्तव्य पालन की प्रेरणा देता है। इससे व्यक्तित्व में निष्ठा, दृढ़ता और उत्तरदायित्व का विकास होता है।
2. **भक्ति योग और व्यक्तित्व निर्माण** :– भक्ति योग व्यक्ति को विनम्रता, समर्पण और सहिष्णुता प्रदान करता है। इससे अहंकार का नाष होता है और व्यक्ति में करूणा एवं मानवता का भाव विकसित होता है।
3. **ज्ञान योग और व्यक्तित्व का निर्माण** :– ज्ञान का महत्त्व बतलाते हुए गीता में कहा गया है कि जब मनुष्य के मन बुद्धि पर सात्विक ज्ञान का प्रभाव पड़ता है तब दैहिक स्वभाव पर भी समबुद्धि रूप परिणाम प्रतिबिम्बित होने लगता है। जब विनम्रता, दम्हीनता, अहिंसा, सहिष्णुता, सरलता, गुरूसेवा, पवित्रता एवं आत्मसंयम इन सब गुणों से व्यक्ति का व्यक्तित्व पूर्ण होगा तभी अज्ञान से बाहर आकर वास्तविक ज्ञान 'तत्व' के ज्ञान से लाभान्वित होगा –

''आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः'' ।[79]

गीता के अनुसार ज्ञान की तरह पवित्र और कोई वस्तु नहीं है वह ज्ञान जो व्यक्त है या अभी भी अव्यक्त है। केवल ज्ञान ही दोनो रूपों में (व्यक्त एवं अव्यक्त) रूपों में मोक्ष का साधन है, व्यक्तित्व निर्माण का सर्वश्रेष्ठ साधन है।

ज्ञान योग आत्मज्ञान की ओर ले जाता है। आत्मा और परमात्मा के एकत्व का बोध व्यक्ति को मोह–माया से मुक्त करता है। इससे व्यक्तित्व में विवेक, धैर्य और स्थिरता आती है।

स्थितप्रज्ञता का आदर्श :–

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मु निरूच्यते।।[82]

गीता में स्थितप्रज्ञ पुरूष को आदर्ष व्यक्तित्व माना है। जो सुख–दुख, हानि–लाभ और जय–पराजय में समान रहता है, वही सच्चे अर्थो में सषक्त और संतुलित व्यक्तित्व का धनी है।

(स) आधुनिक जीवन में गीता के संदेशों की प्रासंगिकता :–

आधुनिक जीवन की जटिलताओं और चुनौतियों का समाधान गीता के शाष्वत संदेषों में मिलता है। चाहे वह तनाव प्रबन्धन हो, नेतृत्व विकास हो, नैतिकता का पालन हो या आत्मिक शांति की खोज, गीता आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी महाभारत के समय थी। वास्तव में गीता का संदेष ''आत्मविकास से लोककल्याण'' है, यही आधुनिक युग की सबसे बड़ी आवष्यकता है।

निष्कर्षः–

प्रत्येक कर्तव्य पवित्र है और कर्तव्य निष्ठा ही भगवत्पूजा का सर्वोत्कृष्ट रूप है और यही सब दार्षनिक आयाम व्यक्तित्व के स्तम्भ है, इनके द्वारा हम कर्मषः अपनी शक्ति को बढ़ाते हुए एक ऐसी अवस्था को प्राप्त कर सकते है जो हमारे जीवन का अति महत्वपूर्ण लक्ष्य है। मानव जीवन में सर्वोत्कृष्ट या सर्वश्रेष्ट अनुभूत तथ्य मोक्ष है, पर इसे प्राप्त करने के लिए ऊपर उठना, व्यक्तित्व को विकसित करना श्रम एवं साधना है, यही सच्चा पुरूषार्थ है, ऊपर उठकर मुक्तिपाना जीवन की सर्वाधिक श्रेष्ठतम उपलब्धि एवं सुन्दर कला हैः

''ऋते ज्ञानात्त मुक्तिः''

गीता एक ऐसा महान दार्षनिक ग्रन्थ है जिसने सभी विषयों को प्रष्न मानकर नाना शास्त्रों के, पुराणों के, उपनिषदों के उत्तरों को श्रंखला बद्ध कर मनुष्य के व्यक्तित्व विकास के लिए रख दिया। भगवद्गीता केवल धार्मिक ग्रन्थ नहीं बल्कि जीवन का दर्षन है। यह व्यक्ति को आत्मज्ञान, कर्तव्यनिष्ठा और भक्ति के माध्यम से

आदर्ष व्यक्तित्व के निर्माण की षिक्षा देती है। आधुनिक युग की जटिलताओं में भी गीता मार्गदर्षन मनुष्य को शांति, संतुलन और नैतिक साहस प्रदान करता है। अतः गीता का अध्ययन एवं अनुसरण व्यक्ति और समाज दोनों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

संदर्भ सूची :

1. श्रीमद्भगवद्गीता – गीताप्रेस, गोरखपुर.
2. विवेकानन्द, स्वामी. गीता पर प्रवचन.
3. गांधी, महात्मा. *गीता माता.*
4. दासगुप्त, सूर्यकान्त. *भारतीय दर्षन और गीता.*
5. तिलक, लोकमान्य. *गीता रहस्य.* किताब महल, इलाहाबाद, 1919.
6. तिलक, लोकमान्य बालगंगाधर. *गीता रहस्य.* मोतीलाल बनारसीदास, मुम्बई, 1975.
7. सरस्वती, स्वामी अखण्डानन. *महाभारत–वेदव्यास.* हिन्दी अनुवाद,, गीताप्रेस, गोरखपुर, 1978.